International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-04-2022, Accepted: 25-04-2022, Published: 10-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 5-7

अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन और बदलावः एक विचार

Teli Momu[1], Shyam Shankar Singh[2]
[1] Assistant Professor, Department of Hindi, Donyi-Polo Govt. College, Kamki, Arunachal Pradesh, Inida
[2] Professor, Department of Hindi, Rajiv Gandhi University, Rono Hills, Doimukh, Arunachal Pradesh, Inida

सारांश
अरूणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर भारत में बसे एक जनजातीय समुदाय से प्रभुत्व राज्य है। इसमें लगभग २६ प्रमुख जनजातियाँ हैं। जनसंख्या के आधार पर अरुणाचल प्रदेश की निशी जनजाति राज्य के बहुसंख्यक जनजाति है। इनकी सामाजिक जीवन सरल एवं सहज लेकिन वैविध्यपूर्ण है। ये 'दोञी–पोलो' अर्थात सूर्य और चाँद को अपना ईष्टदेव मानते हैं। ये प्रकृ ति का पूजा करते हैं। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति विशेष रूप से आदिवासी जीवन शैली से जुड़ी हुई है। इस प्रकार, उनकी सामाजिक व्यवस्था भी अन्य आदिवासी जनजातियों की भाँति है। बढ़ती आधुनिक जीवन के कारण निशी जनजाति की जीवन शैली में भी कुछ बदलाव आया है जिस पर गौर करना अति आवश्यक है।

मूल शब्दः निशी, जनजाति, सामाजिक, बदलाव, एक विचार

प्रस्तावना

अरूणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर भारत में बसे एक जनजातीय समुदाय से प्रभुत्व राज्य है। इसमें लगभग २६ प्रमुख जनजातियाँ हैं। जनसंख्या के आधार पर निशी जनजाति इस राज्य की सर्वाधिक जनजाति मानी जाती है। निशी जनजाति के लोग मंगोलियन नस्ल के माने जाते हैं। ये राज्य के काफी बड़े भू–भाग में फैले हुए हैं। इनके गाँव कही वंश परंपरा के आधार पर बसा हुआ है और कहीं मिश्रित वंश के आधार पर। निशी जनजाति में कई उपजातियाँ हैं, जैसे– कम्दिर, तारा, हिना, , डोहा, तार, इत्यादि। ये 'दोञी–पोलो' अर्थात सूर्य और चाँद को अपना ईष्टदेव मानते हैं। ये प्रकृति का पूजा करते हैं। इनकी सामाजिक एवं धार्मिक जीवन वैविध्यपूर्ण है।

व्यक्ति और समाज का गहरा संबंध है। व्यक्ति समाज के प्रमुख अंग है। व्यक्तिओं की सामूहिक इकाई समाज है। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति विशेष रूप से आदिवासी जीवन शैली से जुड़ी हुई है। इस प्रकार, उनकी सामाजिक व्यवस्था भी अन्य आदिवासी जनजातियों की भाँति है। बढ़ती आधुनिक जीवन के कारण निशी जनजाति की जीवन शैली में भी कुछ बदलाव आया है। जहाँ पहले पूजा अर्चना के लिए बाँस, लकड़ी, पत्ते इत्यादि उपकरणों या सामग्रियों का स्तेमाल करता था वही आज पूजा अर्चना के लिए उपकरण या सामाग्री बाजार से सीधे खरीदी जा रही है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए अर्थात निशी जनजाति की लोकसंस्कृति का विघटनकारी स्थिति को देखते हुए इनकी सामाजिक व्यव्स्था पर गौर करना अति आवश्यक है। अतः अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की सामाजिक व्यव्स्था एवं बदलाव को जानने व समझने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत विचार करना आवश्यक हैं जिस से पाठकों को समझने में आसान होगी।

1. गाँव और गृह–निर्माण

गाँव और परिवार सामाजिक जीवन के प्राथमिक तत्व है। निशी जनजाति के लोग अपने गाँव को 'नामपुम' कहते हैं। 'नामपुम' शब्द दो शब्दों के योग से बना हैं 'नाम' और 'पुम' जिसका अर्थ होता है घर और क्षेत्र। निशी लोग अपना घर अपने पसंद के अनुसार बनाते हैं। प्राचीन समय में निशी लो्ग अपने गाँव को एक ही जगह पर स्थायी रूप से नहीं बसाता था। ये कृषी के उपयुक्त जमीन, युद्ध, प्राकृतिक आपद्दा, बीमारी, व्यावसायिक कारणों से एक जगह से दूसरी जगह में जाकर अपना गाँव बसाता था। ये लोग अपने गाँव को 'नामपुम' कहते हैं। 'नामपुम' शब्द दो शब्दों के योग से बना हैं 'नाम' और 'पुम' जिसका अर्थ होता है घर और क्षेत्र। निशी के कुछ लोग अपने गाँव का नामकरण उपजाति के आधार पर रखते हैं, जैसे बगंग, तोको, तालो, इत्यादि। दोनों गाँव के सीमा–निर्धारण किसी झरना, नदी, पहाड़ इत्यादि के आधार पर किया जाता है।

निशी समाज में संयुक्त परिवार तथा एकल परिवार दोनों पद्धति का प्रचलन है और परिवार की संख्या के अनुसार अपना घर का निर्माण करते हैं । संयुक्त परिवार के लोग अपना घर लम्बा बनाते हैं जिसमें हर एक भाई के लिए अलग–अलग चुल्हे की व्यवस्था होते हैं। निशी समाज में बहुपत्नी पद्धति की भी व्ययस्था है और घर का निर्माण पत्नियों की संख्या के आधार पर भी किया जाता है और हर एक पत्नी के लिए अलग–अलग चुल्हे बना देती है। निशी जनजाति का घर मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित है– 'बाग' (जिस दिशा से सूर्योदय होता है), 'नामरा' (घर का आंतरिक भाग) और 'बोतु' (जिस दिशा में सूर्यास्त होती है) । निशी लोग छत के लिए 'कुलु ओक' (जंगली केले के पत्ते), 'तार ओक' (भेंत के पत्ते), 'सन सुकु' (पेड़ के छिलके) इत्यादि का स्तेमाल करते हैं। किन्तु आज बदलती समय के साथ कुछ लोग छत में टीना का स्तेमाल करते हैं। आज कल ऐसा गाँव कम देखने को मिलता है। जहाँ गाँव में पहले लम्बे–लम्बे घर बनाता था वहाँ

आज हर एक चुल्हे के लिए एक एक घर बनाई जा रही है। जहाँ पहले छत में 'कुलु ओक' (जंगली केले के पत्ते) लगाता था आज वहाँ टीना लगाने लगे हैं। निशी लोग अपने 'नोसु' (गोदाम) को घर से थोड़ी दूरी पर बनाती हैं ताकि किसी भी आगजनी से बच सके। ये लोग अपने बहुमूल्य मूंगों की माला, स्थानीय वस्त्रों, आदि को नोसु में रखते हैं। किन्तु आज कल चोरी के डर से ये लोग अपने इन बहुमूल्य चीजों को लोहे के बक्से में ताला लगाकर रखते हैं। इसके साथ साथ आधुनिक उपकरणों की सुविधा के कारण निशी लोग अपने बहुमूल्य चीजों को सरकारी लॉकर में रखने लगे हैं। ये लोग 'पोरोक पेर' (मुर्गी पालन) का निर्माण घर के पास किया जाता हैं किन्तु ये 'इरिक गुम्र' (सुअर पालन) को घर से दूर बनाते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो एक तरफ संस्कृति और दूसरी तरफ जीवन शैली का परिवर्तन।

2. परिवार

परिवार समाज का अभिन्न अंग है। निशी समाज के परिवार में पुरुष,उसकी पत्नी या पत्नियाँ, विवाहित और अविवाहित बच्चे सब एक साथ रहते हैं। समाज में संयुक्त परिवार की व्यवस्था होने के कारण कभी कभी उसमें बेटे और बहु भी घर में साथ रहते हैं। परिवार का सबसे बुजुर्ग या बड़ा पुरुष प्रधान का काम करता है। पर ऐसा भी अनिवार्य नहीं है कि घर के बुजुर्ग या बड़े ही घर का प्रधान हो। उनके स्थान पर परिस्थितियों के अनुसार घर के कोई कोई छोटे भी घर का प्रधान हो सकता है। परिवार में सबसे बड़े बेटे की जिम्मेदारी अधिक होती है और परिवार में उन्हे विशेषाधिकार भी प्राप्त है। परिवार की सम्पत्ति को बेटों में बाँट दिया जाता है। पहले जमाने में घर की संपत्ति में केवल लड़के बच्चे का अधिकार होता था। लड़की बच्चे को कुछ भी नहीं मिलती थी। किन्तु आज कल निशी समाज में ऐसी कठोर नियम नहीं है। हाँ, जमीन को लेकर कुछ हद तक केवल बेटे का हक होता है किन्तु अन्य सम्पत्ति को माँ पिताजी बेटियों में भी बाँट दी जाती है। निशी परिवार में आमतौर पर चाचा–चाची को 'आचि–आते' अर्थात्त भईया–दीदी के नाम से अभिहित किया जाता है। घर की बेटी शादी हो जाने के बाद भी अपने मायके आना जाना कर सकती है और इसमें कोई पाबंधी नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि निशी की पारिवारिक जीवन प्रेम और लगाव से परिपूर्ण है।

3. विवाह प्रणाली

विवाह के बिना परिवार अधुरा है। निशी समाज में कई प्रकार के विवाह प्रणाली प्रचलित है। पहले इस समाज में बहुपत्नी प्रथा मुख्य रूप से प्रचलित थी। इसका मुख्य कारण आर्थिक गतिविधियाँ या व्यक्तिगत जीवन ही मानी जाती थी। आर्थिक गतिविधियों को सुधारने के लिए या फिर पहली पत्नी की संतान न होने पर दूसरी शादी की जाती हैं। अगर परिवार की परिस्थितियाँ दूसरी शादी की ओर संकेत करता है तो घर का प्रधान उसके लिये निर्णय ले सकता है। बहुपत्नी व्यवस्था में प्रथम पत्नी घर की प्रधान पत्नी होती है और बाकी पत्नियाँ गौण होती है। किन्तु निशी समाज में आज कल यह प्रथा कम देखने को मिल रही है। इसका कारण शिक्षा है। इस समाज में बहुपत्नी प्रथाओं के साथ–साथ विधवा–विवाह, प्रेम–विवाह प्रथाओं का भी प्रचलन है। निशी समाज में पारम्परिक विवाह प्रणाली की प्रक्रिया का अनुपालन किया जाता है। पारम्परिक विवाह प्रणाली में रिश्ते की शुभ या अशुभ का पता लगाने के लिए विवाह से पहले चूजे के कलेजे द्वारा 'ञुब' (पुरोहित) इसकी जाँज की जाती है। यदि पुरोहित की जाँच नकारात्मक निकला तो शादी की प्रक्रिया को वही पर रोक दी जाती है और यदि पुरोहित की जाँच सकारात्मक निकली तो शादी की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाता हैं। उसके बाद लड़के के तरफ से लड़की के घर में 'ञेदा' (शादी पार्टी) का आयोजन करते हैं जिसमें गाँव के सभी लोग भाग लेते हैं। विवाह प्रक्रिया के दौरान शुभचिन्तक के रूप में लड़के के परिवार को रिश्तेदार, भाई–भईया, पड़ोसी, आदि अपने तरफ से कुछ न कुछ उपहार या सहायता के रूप में मदद करते है, जैसे– मिथुन, गाय, सुअर, मदिरा, सूखा मांस आदि। मदद करते हैं। उसी प्रकार लड़की की तरफ में भी एक दूसरे की मदद करती है। विवाह में लड़के की तरफ से 'सब' (मिथुन) तथा लड़की की तरफ से 'तस्सी' (मूंगों की माला) का लेन–देन होता है। निशी समाज में विवाह का सम्पन्न दोनों पक्षों के घर पर होता है। पहले लड़के वाले लड़की के घर में दहेज के रूप में मांस–मछली, पेय आदि लेकर जाता है और उसके बाद लड़के के घर पर भी दुल्हन के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया जाता है। निशी लोग दोनों समारोह में 'बुया' (लोकनृत्य) करते हैं। निशी समाज में विधवा विवाह की प्रावधान है। यदि भाई या भैया की आपात मृत्यु हो जाता है तो उसकी विधवा पत्नी को भाई या भईया अपनी पत्नी की तरह देखभाल कर सकता है। किन्तु आज कल यह अनिवार्य नहीं है। निशी समाज में विधवा को अन्यं वंश के पुरुष से पुनः विवाह करना मनाही हैं। विधवा विवाह की इस व्यवस्था को 'ञेहि या हमी सोनाम' कहा जाता है। इस समाज में तलाक व्यवस्था न की बराबर है। निशी समाज में शादी को अपना गौराव मानते हैं और पत्नी को इज्जत। इसलिए शादी के बाद पति पत्नी आसानी से एक दूसरे को नहीं छोड़ती। यह निशी समाज में बहुपत्नी होने का बहुत बड़ा कारण भी है। लेकिन आज कल पारम्परिक तलाक नहीं होने के कारण तथा आधुनिक जीवन शैली के चलते इस समाज में भी अन्य समाज की तरह तलाक होने लगी है। भले ही ये पारम्परिक तौर पर तलाक नहीं देते फिर भी ये अदालत या वकीलों के मदद से एक दूसरे को तलाक दे रही हैं। निशी समाज में 'सोर' (दहेज) प्रथा है। यहाँ लड़के वाले लड़की को दहेज के रूप में मिथुन, सुअर और अन्य सामान देते हैं। किन्तु समय के साथ साथ निशी समाज की विवाह प्रणाली में कुछ बदलाव देखेने को मिल रही है। पहले दहेज के रूप में वर पक्ष की तरफ से पूर्णतः मिथुन या सुअर देता था किन्तु आज उसके जगह पर नकद का स्तेमाल किया जा रहा है। कारण यह भी है कि भूमंडलीकरण के चलते पशु–पालन करना हर किसी के वश की बात नहीं है। पहले पेय के रूप में 'तमि ओपो' (बाजरा से बनी मदिरा) लेकर शादी पार्टी में जाता था वही आज उसके लिए पेपसी, मिरिन्दा, कोका–कोला, चीनी, चाईपत्ती इत्यादि लेकर जाता है। लेकिन अभी भी कही कही पारम्परिक विवाह प्रणाली को अपना रहे हैं। इस प्रकार देखा जाये तो अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की विवाह प्रणाली में कुछ परिवर्तन दिखाई दे रही है।

4. निशी समाज में महिलाओं का स्थान

निशी समाज में सामाजिक विकास के लिए महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। निशी महिला आतनिर्भर होती है। किन्तु कहीं कहीं इनके लिए निषेध भी है। सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार मासिक धर्म के समय महिलाओं को भुना हुआ मांस

और जंगली मांस खाना सेवन करना मनाही है। इसी दौरान उनके उन्हें अपने पति से दूर रहना होता है। उनके लिए खाना पखाने के लिए अलग बर्तन मुहैया कराया जाता है। वे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बैठकर खाना नहीं खा सकती। उनके लिए किसी भी अनुष्ठान में भाग लेने की मनाही है। वे किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकती। घरेलु कामकाज में निशी महिला बहुत सक्रिय होती है। वे पुरुष के बराबर काम करती है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से निशी महीला बहुत ही ताकत होती है। ज्यादातर समय ये झूमखेती में अपना समय बिताती है। ये जंगल में जाकर लकड़ी काटती है। शाम को घर आकर मदिरा बनाते है और अपने परिवार के सदस्यों को पिलाती है। व्यावासायिक क्षेत्र में भी निशी महिला आत्मनिर्भर होती है। ये अपने पति पर हमेशा निर्भर नहीं रहती है। चाहे वो शिकार करन हो, मछली पकड़ना हो, जंगल साफ करना हो, खेती करना हो सब स्वंय ही करती है।

5. वेश–भूषा

निशी के लोग लंगोट पहनते है और शरीर में वस्त्र लपेटते हैं। ये कमर को बाँधकर रखने के लिए ये बेंत से बना कई छल्ले पहनते हैं जो कमर को बाँधकर रखते हैं। पुरुष लोग दोनों कंधों से लपेटकर कपड़े पहनते हैं। पुरुष लोग अपने केश को मस्तक के आगे में बाँधते हैं जिसमें लोहे और पीतल के नुकीले सूजे होते हैं। सिर पर बेंत की बनी टिपी पहनते हैं जिसको हम 'पुदुम' या 'बोपिया' कहते हैं। टोपी में धनेश पक्षी की लम्बी एवं सुन्दर चोंच लगाते हैं जिसको 'पगा हीबू' (धनेश की चोंच) कहते हैं। टोपी के साथ–साथ धनेश की चोंच को सुन्दर तरीके से रंगीन किया जाता हैं जो देखने में बहुत ही खूबसूरत होती हैं। पुरुषजन पीठ में 'नारा' (पुरुष थैला) लेकर घुमते हैं जो युद्ध के समय कवच के रूप में काम आते हैं। पुरुषजन हमेशा 'ओयोक' (दाव) को हमेशा अपने पास रखते हैं। पुरुषजन के अलावा इस जनजाति की स्त्रियाँ लुंगी या अन्य कपड़ा या एरी चादर पहनती हैं। स्त्रियाँ बेंत या बाँस से बने आभूषण पहनती हैं,जैसे– 'ञुरु रुबिन' (कर्णफूल), 'कोज' (चुड़ियाँ), 'तस्सी' (मूंगों की माला) भी पहनती हैं। आज कल स्त्रियाँ 'गाले' पहनती हैं। लोकगान, लोकनाट्य, आदि प्रस्तुत करते हैं।

अतः निशी समाज अरूणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजाति में से हैं जिनके तालुककात जनजातीय समाज से हैं। इनकी सामाजिक जीवन बहुत ही सहज एवं सरल है। बदलते समय के साथ इस जनजाति की सामाजिक व्यवस्था में बदलाव देखेने को मिल रही है। इसे बदलाव कहूँ या परिवर्तन ? या फिर संस्कृति का विघटन? एक तरफ देखा जाए तो समय के साथ बदलना भी जरूरी है किन्तु जब हम संस्कृति की बात करते हैं तो हमें डर लगता है कि कहीं इस चोटी से गलती से हमारे संस्कृति ही कहीं लुप्त न हो जाए। इसलिए यह जरूरी है कि हम नए जीवन शैली के साथ–साथ अपनी संस्कृति को बचाए रखें। उसके लिए हमें अपने लोकसाहित्य को लिखित रूप में सुरक्षित रखना अति आवश्यक है।

टिप्पणी

1. निशी जनजाति की सामाजिक जीवन शैली को संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत किया है और साथ में इसकी बदली रूप को भी रेखांकित किया है।
2. इस आलेख में बोलचाल भाषा का प्रयोग किया गया है।

संदर्भ सूची

1. जे. एन. चौधरी, अरुणाचल पनोरमा, १६७३
2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा.लिमिटेड, इलाहाबाद, संस्करण–२००८
3. डॉ. जोराम आनिया ताना, अरूणाचल प्रदेश निशी लोकगीतः सांस्कृतिक अध्ययन, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, संस्करण–२००६
4. डॉ. जोराम यालम,न्यीशी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन, गुवाहाटी, संस्करण–२०१०
5. डॉ. धर्मराज सिंह, अरूणाचल की गालो जन–जाति और उसकी सामाजिक व्यवस्था, अरूणाचल नागरी संस्था, ईटानगर –२००१
6. डॉ. धर्मराज सिंह, अरूणाचल की जनजातियाँ और ऐतिहासिक स्थान, अनुसंधान निदेशालय, अरूणाचल प्रदेश, ईटानगर संस्करण–१६६४
7. डॉ. सत्येन्द्र, लोकसाहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर संस्करण–२००६
8. तुम्बम रीबा 'लिली', काताम अरूणाचल प्रदेश की जनजातियों की लोककथाएँ, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, संस्करण–२०२०
9. प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय, हिन्दी–निशी अध्येता कोश, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, संस्करण–२०१६
10. तेली मोमू सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दोञी पोलो शासकीय महाविद्यालय, कामकी
11. प्रो. श्याम शंकर सिंह प्रो. हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनोहिल्स, दोईमुख